हमारे दिल में, मन में, हर कर्म में स्वच्छता हो तो उसका फल बहुत मीठा है

(दादी जानकी जी - 24.05.2006)

बाबा से सर्व सम्बन्धों का रस लेने के लिए एकान्त बहुत जरूरी है। जिसको बाबा से सर्व सम्बन्ध का रस लेना है वो एकान्त प्रिय होता है। पुरुषार्थ का पहला कदम है एकान्तवासी रहना। उसी कदम से कदम आगे बढ़ेगा। यानि बाबा से सर्व सम्बन्ध का रस लेना, और बातों के अन्त में नहीं जाना, सच है या झूठ है..., ईश्वर के अन्त में जाना। फिर एकाग्रता की जो शक्ति है वो एक संकल्प में टिकने देती है। नहीं तो अपनी कमी दिखाई नहीं देगी। आंख धुंधली होगी। देखने के लिए आंख चाहिए, देखेंगे दर्पण में। दर्पण साफ होगा तो दिखाई देगा। तीसरा नेत्र खुला हुआ हो।

एक वन्डरफुल बात यह है कि किसी का दर्पण साफ नहीं है, ऑख भी खुली नहीं है, अकेले रहते हैं तो भी अपने को बहुत अच्छा समझते हैं। दस के साथ रहते हैं तो पता चलता है कि मेरे में क्या कमी है। कई बार औरों का दोष दिखाई पड़ता है, अपना नहीं दिखाई पड़ता है। अपना भी न दिखाई दे और दूसरों का भी न दिखाई पड़े इसके लिए यज्ञ में भट्ठियाँ रखी जाती है।

कई बार मूँझ जाते हैं मैं क्या हूँ, न दुनिया की हूँ, न भगवान की हूँ। किधर की हूँ? इसलिए बाबा कहता है एकान्त में बैठ बाबा से ऐसे सम्बन्ध जोड़ो। तो अन्तरमन की आंख खुले, दर्पण साफ हो जाये। ऐसी सच्ची लगन हो, लगन में मगन रहने की तीव्र इच्छा हो। फिर योग की अग्नि चाहिए। ऐसे मगन नहीं हो सकते हैं, कारण क्या? योग अग्नि की तरह से नहीं है जिससे हमारा सारा किचड़ा साफ हो जाये, बदबू भी न आये। अन्दर कुछ भी होगा तो सच्ची खुशबू नहीं आयेगी। बाबा ने कहा था जहाँ बदबू होती है तो अगरबत्ती लगाते हैं, उसकी खूबी है कि बदबू खत्म कर देती है। किचड़े को जलाने के लिए पहले कोने में रखते हैं इकट्ठा करके फिर जलाते हैं ऐसे नहीं जलाते हैं। तो मुझे बाबा का खुशबूदार फूल बनना है, भगवान उस फूल को स्वीकार करे, मैं बाबा के आगे जा सकूँ।

सच्चा एक गुलाब का फूल भी अच्छा है, एक बार हलवा बनाकर भोग लगाया तो उसमें चीनी में चीटीं मकोड़ा था साफ नहीं किया, बाबा को वह वतन में दिखाई दिया, बोला यह क्या लाई हो? तो वतन से वापस आ गयी। तब से लेकर भोग बनाने वालियों ने बहुत ध्यान रखा है। बाबा को यह समझते नहीं - बाबा क्या है, कैसा है। बाबा की जो बातें देखी सुनी हैं वो बहुत विधिपूर्वक ध्यान में रखी है। इतनी स्वच्छता दिल में, मन में, व्यवहार में, कर्म है तो उसका फल मीठा है। बाबा को ऐसे बच्चों से खुशबू आती है।

बाबा से मिलने का सुख जो है, दुआयें जो हैं, उनसे कई वंचित हैं। भगवान मेरा बाप है, भाग्यविधाता है। भगवान भाग्य हमारे हाथों में देता है, हमारे दिल को जान कर दिलों का मालिक बना है। दिल में कोई बात को रखकर भगवान को दिल से दूर कर देते हैं। फिर नाच नहीं सकते हैं। आत्म अभिमानी स्थिति न सिर्फ उमंग-

उल्लास दिलाती है, पर करावनहार बाबा के हाथों में हाथ अनुभव होता है। निमित्त बच्चा है अन्दर में बाप है, ऐसा अनुभव करने की अन्दर लगन नहीं है तो योग अग्नि प्रज्जवलित होती नहीं है।

ज्वालामुखी योग क्या है? योग ऐसा हो जो वायुमण्डल को पावरफुल बना देवे। हमारा व्यर्थ संकल्प न चले और औरों का भी न चले। अगर ऐसा वायुमण्डल बना सकते हैं तो बाबा के मददगार बच्चे हो। इतनी मदद मिली है तो मैं और मदद भल न करूँ पर सच्ची होकर तो रहूँ, हल्की रहूँ, भारी तो न रहूँ।

बाबा का बच्चों में कितना प्यार है, मुझे भी कहता है तुम उसको याद कर। बाबा कहता है तुम चिन्ता क्यों करता है, मैं बैठा हूँ ना। अन्दर में भारीपन क्यों रखा है जो अच्छी बातें सुनते नींद आ जाती है। अपने ऊपर तरस खाना चाहिए। आप इस बात को लूज रखोंगे तो शिवबाबा भी कहेगा मेरा पार्ट पूरा हुआ। ज्ञान सागर का पार्ट पूरा हुआ। ब्रह्मा बाबा भी कहेगा मेरा पार्ट भी पूरा हुआ फिर रहा धर्मराज। फिर धर्मराज के सामने बैठना। मुझे भक्ति में भी डर लगता था। मुझे गर्भ में भी सजा नहीं खानी है, यहाँ भी कोई सजा न मिले। टीचर यह न कहे पीछे बैठ जा। इतना डर लगा है सजा का। बाबा का डर नहीं रखा है, पर डर है। अरे और कुछ न सोचो, अपने लिए तो सोचो। भगवान ने ऐसा बनाया है जो भक्ति में भी मुझे डर लगता था। आपस में कोई बात करते हैं तो भी बाबा को अच्छा नहीं लगता है, क्या जरूरत थी। इतना बाबा ने हमारे पर ध्यान रखा है। मेरा काम है समझाना। अभी चढ़ती कला का समय है, मंजिल ऊंची है, कदम-कदम पर सम्भलना है।

अभी जो भूले की हैं जो हुआ है, उसको लगन की अग्नि में भस्म करना है तब बाबा के याद की मस्ती में मगन रह सकूंगी। भगवान जाने मैं जानूं, मैं भगवान के साथ रहूँ, वो मेरा साथ रहे तो वो शक्ति फिर औरों को भी मिलेगी। मुरलियों में सब शिक्षायें हैं, परन्तु शिक्षाओं को अन्दर धारण करने लिए अन्दर ताला लगा कर रखना, जो अन्दर शिक्षा जा भी न सके। यह इन्द्रप्रस्थ है, जिसका कोई दुनिया वाले से सम्बन्ध है, बुद्धि पत्थर हो गयी। यहाँ रहने वाले की कोई मृत्युलोक के मनुष्य से बुद्धि लटकेगी तो बुद्धि पत्थर हो जायेगी। काम नहीं करेगी। अगर ऐसी बुद्धि काम नहीं करती है तो भी बाबा कहता है ऐसी बुद्धि का ताला खोलकर मैं चाबी तुमको देता हूँ, चाबी गुम नहीं करना। फिर से खोल देता हूँ। रहम दिल हूँ ना। चाबी लगाने का भी अक्ल चाहिए। बाबा को मतलब से याद करेंगे, सच्चाई से याद नहीं करेंगे तो ताला कैसे खुलेगा। ऐसे ही दिन बीत रहे हैं। कल मेरे लिए क्या होगा, हरेक अपने लिए सोचे। चढ़ती कला वाला होगा या उतरती कला का होगा।

अनासक्त वृत्ति रखो, आसक्ति भी रोकती है। लम्बी खजूर है, जाना जरूर है। कैसे? बाबा ले जायेगा। बाकी खुद ही रूकते हैं औरों को रोकते हैं, भगवान को तरस पड़ता है पर अपने पर तरस खाना है जो मेरा समय सफला हो। जो बाबा के नयनों पर बैठ उस पार चलूं। अच्छा -

-: ओम् शान्ति :-